दैनिक जागरण 10/10/2024

कृषि की पढ़ाई करने वाले छात्र अब बन सकेंगे उद्यमी

सीएसए ने स्नातक के पाठ्यक्रमों में किया बदलाव, अगले सत्र से परास्नातक व पीएचडी के कोर्स में बदलाव की तैयारी

विवेक मिश्र ● जागरण

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में कृषि स्नातक के विद्यार्थी खेती किसानी की पढ़ाई के साथ बिजनेस टिप्स भी लेंगे। छात्रों को मूल्यपरक शिक्षा, बिजनेस विकास, उद्यमी कौशल और कौशल विकास के नए कोर्स दो साल में ही पूरे पढ़ने होंगे। विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करते हुए स्नातक के पाठ्यक्रमों में बदलाव किया है, जो इसी सत्र से प्रभावी होगा। अगले सत्र से परास्नातक और पीएचडी के कोर्स में परिवर्तित पाठ्यक्रमों के साथ पढ़ाई कराई जाएगी।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) की छह डीन कमेटी की सिफारिशों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने का उल्लेख किया है। इसके बाद विश्वविद्यालय में स्नातक के कोर्स में बदलाव हुआ है। पहली बार पढ़ाई शुरू होने के दो सप्ताह तक दीक्षारंभ होगा, जिसमें विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमों के बारे में बताया जाएगा। विद्यार्थियों के लिए पुरातन छात्रों के साथ संवाद और उद्योगों के विशेषज्ञों के व्याख्यान सत्र आयोजित किए जाएंगे। नए कोर्स में उन विषयों को शामिल किया गया है जो विद्यार्थियों को नौकरी तलाशने के बजाय उद्यमी बनाकर नौकरी देने लायक तैयार करेंगे।

पढ़ाई में बीच में छोड़कर वापस आने का भी विकल्प रहेगा : सीएसए के विद्यार्थियों को एकाधिक प्रवेश-निकास (मल्टीपल एंट्री-एग्जिट) की सुविधा मिलेगी। इसमें स्नातक की पढ़ाई बीच में छोड़ने पर और तीन साल में वापस आने पर आगे की पढ़ाई शुरू करने का विकल्प मिलेगा। पहले साल संस्थान छोड़ने पर स्नातक प्रमाणपत्र और दो साल पढ़ने के बाद छोड़ने पर स्नातक डिप्लोमा मिलेगा। हालांकि इनको पाने के लिए उन्हें 10 सप्ताह का प्रशिक्षण करना होगा। अगले साल से डिप्लोमा इंजीनियरिंग वालों को लैटरल एंट्री के तहत सीधे दूसरे साल में प्रवेश दिया जाएगा।

सीएसए भवन ● जागरण आर्काइव

मुख्य विषयों में ये हैं शामिल

खेती आधारित आजीविका प्रणाली, उद्यमिता विकास, व्यवसाय प्रबंधन, कृषि विपणन और व्यापार, कृषि सूचना विज्ञान और एआइ, संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास।

ये हैं कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम

जैव एजेंट, जैव उर्वरक, बीज उत्पादन, बीज परीक्षण, शहद उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मुर्गी पालन, कीट पालन।

नए कोर्स पढ़ना हुआ अनिवार्य

मेजर सब्जेक्ट और कौशल विकास के कोर्स में जिस कंटेंट को शामिल किया गया है, उसे स्नातक के सभी छात्रों (कृषि, बागवानी, वानिकी, मत्स्य पालन और गृह विज्ञान) को पढ़ना अनिवार्य रहेगा। इन कोर्सों को पढ़ने के बाद छात्र उद्यमिता, बिजनेस के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए तैयार होंगे।

स्नातक में वर्तमान सत्र से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू किया गया है। कोर्स में मूल्यपरक शिक्षा, उद्यमी और कौशल विकास कोर्स शामिल किए गए हैं। विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम में किया गया बदलाव इसी सत्र से लागू हो गया है।

प्रो. सीएल मौर्य, डीन (कृषि) सीएसए

सीएसए करेगा गेहूं की चार और प्रजाति का उत्पादन

जासं, कानपुर : सीएसए कृषि विश्वविद्यालय अब जल्द ही गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति का उत्पादन शुरू करेगा। राज्यस्तरीय शोध सलाहकार समिति ने इसके विमोचन की संस्तुति कर दी है। जल्द ही केंद्रीय समिति से मंजूरी मिलने की संभावना है। विश्वविद्यालय में गेहूं व जौ अभिजनक एवं निदेशक बीज और प्रक्षेत्र डा. विजय कुमार यादव ने बताया कि गेहूं की एक साथ चार प्रजातियों को बीज विमोचन के लिए अनुमोदित होना संस्थान के लिए बड़ी उपलब्धि है। गेहूं की प्रजाति के 1905 लवण एवं क्षारीय मृदाओं में औसत उत्पादन 40 .55 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति सभी रोगों के प्रति सहिष्णु है। जबकि . के 1910 इसका लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 40 .06 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इन प्रजातियों को विकसित करने वाली टीम में डा. सोमवीर सिंह, डा. विजय कुमार यादव, डा. पीके गुप्ता, डा. पीके सिंह, डा. जावेद बाहर, डा. चारुल कंचन, तकनीकी सहायक ज्योत्सना, पंकज कुमार, दिनेश कुमार की अहम भूमिका रही है।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र
दीक्षालय प्रवाह

E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति ने गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन हेतु किया संस्तुति

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गेहूंज्जौ अभिजनक एवं निदेशक बीज तथा प्रक्षेत्र डॉक्टर विजय कुमार यादव ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति जो उत्तर प्रदेश के निदेशक कृषि डॉक्टर जितेंद्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उसमें विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन हेतु संस्तुति कर दिया है। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा गेहूं की एक साथ चार प्रजातियों को बीज विमोचन हेतु समिति द्वारा अनुमोदित करना एक निश्चित तौर पर विश्वविद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने बताया कि गेहूं की प्रजाति के 1905 लवण एवं क्षारीय मृदाओं में औसत उत्पादन 40. 55 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति सभी रोगों के प्रति सहिष्णु है तथा यह 120 से 123 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। जबकि के 1910 इसका लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 40.06 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह 125 से 130 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। उन्होंने बताया कि के 2001 लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 39. 99 कुंतल प्रति हेक्टेयर देती है यह 130 से 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है। जबकि के 2010 लवण एवं क्षारीय भूमियों में 39. 21 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज देती है यह 130 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इन प्रजातियों को विकसित करने वाली टीम डॉक्टर सोमवीर सिंह, डॉक्टर विजय कुमार यादव, डॉक्टर पीके गुप्ता, डॉक्टर पीके सिंह, डॉक्टर जावेद बाहर, डा0 चारुल कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना, पंकज कुमार एवं दिनेश कुमार आदि का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ0 आनंद कुमार सिंह ने प्रदेश स्तर पर गेहूं की चार प्रजातियों की संस्तुति पर हर्ष व्यक्ति करते हुए टीम को उनके उज्जवल भविष्य हेतु बधाइयां दी हैं।

हिंदुस्तान 10/10/2024

संस्तुति | उत्तर प्रदेश राज्यस्तरीय शोध सलाहकार समिति ने बीज विमोचन की दी संस्तुति, गेहूं की चार के-1905, के-1910, के-2001, के-2010 के अलावा मटर की केपीएमआर-907 विकसित की

रिकॉर्ड : सीएसए विवि ने दीं गेहूं की चार और मटर की एक नई प्रजाति

कानपुर, प्रमुख संवाददाता।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) ने एक साथ गेहूं की चार नई प्रजाति जारी की है। विवि के वैज्ञानिकों का दावा है कि एक साथ गेहूं की चार प्रजाति जारी करना एक रिकार्ड है। मटर की भी नई प्रजाति विकसित की है। उत्तर प्रदेश राज्यस्तरीय शोध सलाहकार समिति ने बीज विमोचन के लिए संस्तुति भी दे दी है। गेहूं की प्रजातियां न सिर्फ किसानों की आय बढ़ाएंगी बल्कि के-1910 प्रजाति लोगों के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखेंगी। इस प्रजाति की मदद से कुपोषण को कम किया जा सकेगा।

सीएसए में गेहूं की नई प्रजाति का अवलोकन करते वीसी डॉ. आनंद कुमार सिंह।

दरअसल, इसमें प्रोटीन के साथ आयरन व जिंक की पर्याप्त मात्रा है। विवि ने एक दिन पहले ही पूरे उत्तर भारत के लिए जौ की नई प्रजाति आजाद जौ-34 को लांच किया था। जिसे केंद्रीय प्रजाति विमोचन समिति ने संस्तुति प्रदान की थी।

किसानों की आय बढ़ाने और कुपोषण से जंग जीतने को लेकर वैज्ञानिकों के प्रयासों का फल आने लगा है। सीएसए के वैज्ञानिकों की तीन वर्षों से चल रही रिसर्च का फल नई प्रजाति के रूप में मिलने लगा है। डॉ. विजय कुमार यादव, डॉ. सोमवीर सिंह, डॉ. पीके गुप्ता, डॉ. पीके सिंह, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. जावेद, डॉ. चारुलता कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना, पंकज कुमार, दिनेश कुमार के प्रयास की बदौलत विवि ने एक साथ गेहूं की चार प्रजातियां विकसित की है, जिसके बीज अगले साल से किसानों को मिलने लगेंगे। वहीं, मटर की एक नई प्रजाति वैज्ञानिक डॉ. एसके गुप्ता और डॉ. गीता राय की टीम ने विकसित की है। जिसमें अधिक उत्पादन के साथ रोगमुक्त होने से किसानों के लिए लाभदायक होगी।

गेहूं की नई प्रजाति

- के-1905 : यह प्रजाति चेक प्रजाति के सापेक्ष 10.87 फीसदी अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 40.55 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति गेहूं में लगने वाले रोगों से मुक्त है। यह 120 से 123 दिन में पककर तैयार हो जाती है।
- के-1910 : यह प्रजाति चेक प्रजाति के सापेक्ष 8.19 फीसदी अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 40.06 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 12 फीसदी के साथ आयरन की मात्रा 39.04 फीसदी और जिंक की मात्रा 40.08 पीपीएम है। यह पोषण सुरक्षा की दृष्टि से सभी प्रजातियों से आगे है। यह फसल 125 से 130 दिन में पककर तैयार हो जाती है।
- के-2001 : यह प्रजाति चेक प्रजाति के सापेक्ष 8.87 फीसदी अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 39.99 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति गेहूं के सभी रोगों से मुक्त है। यह 130 से 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है।
- के-2010 : यह प्रजाति चेक प्रजाति के सापेक्ष 10.96 फीसदी अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 39.21 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 12 फीसदी है। यह प्रजाति गेहूं में लगने वाले सभी रोगों से मुक्त है।

मटर की नई प्रजाति

केपीएमआर-907 : यह प्रजाति चेक प्रजाति के सापेक्ष 9% अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 23 से 26 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह चेक में लगने वाले रोगों से मुक्त है। यह 50 से 60 दिन में तैयार हो जाती है।

गर्व का पल

> केंद्रीय समिति से जौ की नई प्रजाति आजाद जौ-34 की संस्तुति मिलने के अगले ही दिन राज्यस्तरीय समिति ने गेहूं की चार व मटर की एक नई प्रजाति की संस्तुति प्रदान की है। यह विवि के लिए गर्व का पल है।
>
> – डॉ. आनंद कुमार सिंह
> कुलपति, सीएसए विश्वविद्यालय

दैनिक जागरण आई नेक्स्ट 10/10/2024

सीएसए यूनिवर्सिटी में यूजी का सिलेबस बदला

अब एग्री स्टूडेंट्स भी पढ़ेंगे बिजनेस व एंटरप्रेन्योरशिप

एंटरप्रेन्योरियल स्किल वैल्यू एजुकेशन और स्किल इनहैंसमेंट कोर्स शामिल

kanpur@inext.co.in

KANPUR (09 Oct): देश की टॉप एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी में शामिल सीएसए से पढ़ाई करने वाले एग्रीकल्चर स्टूडेंट्स को अब खेती बाड़ी के साथ साथ बिजनेस डेवलपमेंट, एंटरप्रेन्योरियल स्किल और स्किल इनहैंसमेंट का पाठ भी पढ़ाया जाएगा. सीएसए में अंडर ग्रेजुएट कोर्स का सिलेबस बदल दिया गया है. जो कि इसी सेशन से लागू हो जाएगा. आईसीएआर की 6 डीन कमेटी की सिफारिशों में एनईपी 2020 को लागू करने की बात कही है, जिसके बाद सीएसए में यूजी के कोर्स में बदलाव हो गया है. अब पीजी और पीएचडी का सिलेबस बदला जा रहा है.

जॉब देने वाले बनेंगे स्टूडेंट्स

कोर्स बदलने के साथ साथ इस बार से पढ़ाई शुरू होने के दो हफ्ते तक दीक्षारंभ चलेगा. जिसमें स्टूडेंट्स को कोर्स के बारे में बताया जाएगा. इसके साथ साथ एलुमिनाई टॉक और इंडस्ट्री के स्पेशलिस्ट्स के सेशन भी होंगे. अभी तक एग्रीकल्चर स्टूडेंट्स को सिर्फ एग्रीकल्चर से जुड़ी बारीकियां पढ़ाई जाती थीं. नए कोर्स में उन चीजों को शामिल किया गया है जो कि स्टूडेंट को कहीं जॉब खोजने के बजाय एंटरप्रेन्योर बनाकर जॉब देने वाला बनाएंगे. इसके अलावा कुछ ऐसे टॉपिक भी हैं जो कि खुद का छोटा बिजनेस शुरू करने के लिए भी तैयार करेंगे.

लैटरल एंट्री से अगले सेशन से होंगे एडमिशन

FILE PHOTO

ये फायदे होंगे बदलाव से

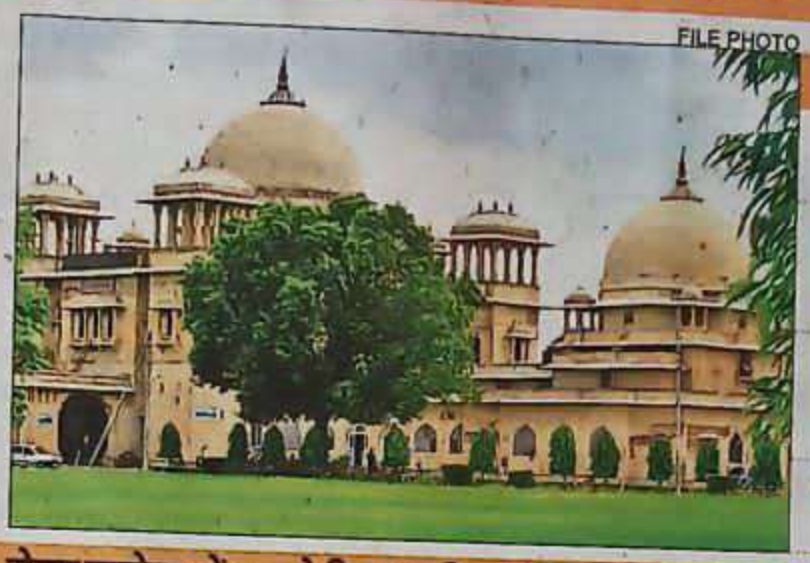

- खेती बाड़ी के साथ बिजनेस के गुर भी सिखाए जाएंगे
- कोर्स के बाद जॉब करने या एंटप्रेन्योर बनकर जॉब दे भी देंगे
- खुद का छोटा बिजनेस शुरू करने के लिए भी तैयार हो सकेंगे
- सिलेबस का दायरा बढ़ने से जॉब्स मिलना भी होगा आसान

मेजर सब्जेक्ट में इनको किया शामिल

1. फार्मिंग बेस्ड लाइवलीहुड सिस्टम
2. एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट
3. एग्री मार्केटिंग एंड ट्रेड
4. एग्री इंफार्मेटिक्स एंड एआई
5. कम्यूनिकेशन स्किल और पर्सनैलिटी डेवलपमेंट
6. बिजनेस मैनेजमेंट

स्किल इनहैंसमेंट कोर्स

- बायो एजेंट
- बायो फार्टिलाइजर
- सीड प्रोडक्शन
- सीड टेस्टिंग
- हनी प्रोडक्शन
- मशरूम प्रोडक्शन
- पोल्ट्री फार्मिंग
- इंसेक्ट फार्मिंग

" यूजी में इस सेशन से एनईपी को लागू कर दिया गया है. कोर्स में वैल्यू एजुकेशन, एंटरप्रेन्योरियल स्किल और स्किल इनहैंसमेंट कोर्स जोड़े गए हैं. स्टूडेंट्स को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सिलेबस में किया गया बदलाव इसी सेशन से लागू होगा.

प्रो. सीएल मौर्य, डीन एग्रीकल्चर, सीएसए

मल्टीपल एंट्री एग्जिट और लैटरल एंट्री

सीएसए स्टूडेंट्स को मल्टीपल एंट्री एग्जिट की फैसिलिटी मिलेगी. इसमें चार साल के यूजी में बीच में पढ़ाई छोड़ने के बाद तीन साल में वापस आने पर आगे की पढ़ाई शुरू करने का मौका मिलेगा. पहले साल छोड़ने पर यूजी सर्टिफिकेट और दो साल पढ़ने के बाद छोड़ने पर यूजी डिप्लोमा मिलेगा. हालांकि इनको पाने के लिए आपको 10 सप्ताह की ट्रेनिंग करनी होगी. इसके अलावा सीएसए में अगले साल से डिप्लोमा इंजीनियरिंग वालों को लैटरल एंट्री के तहत सीधा दूसरे साल में एडमिशन दिया जाएगा. सिलेबस में शामिल किए गए वैल्यू एजुकेशन, एंटप्रेन्योरियल स्किल और स्किल इनहैंसमेंट कोर्स को शुरूआती दो साल में ही पढ़ा दिया जाएगा.

सभी को पढ़ना कंपलसरी

मेजर सब्जेक्ट और स्किल इनहैंसमेंट कोर्स में जिस कंटेंट को शामिल किया गया है. उसे सभी यूजी स्टूडेंट्स (एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर, फारेस्ट्री, फिशरी और होम साइंस समेत सभी) को पढ़ना कंपलसरी है. इनको पढ़ाने का सीधा सा उद्देश्य यह है कि स्टूडेंट की पढ़ाई पूरी होने के बाद जॉब, एंटप्रेन्योरशिप या बिजनेस किसी न किसी जरिए से वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके.

सीएसए के साइंटिस्ट्स ने गेंहू की चार नई वैरायटी एक साथ लांच की

kanpur@inext.co.in

KANPUR (09 Oct): सीएसए के साइंटिस्टों की ओर से डेवलप की गई गेहूं की चार वैरायटी को उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति ने विमोचन की संस्तुति की है. डायरेक्टर सीड एंड फार्म डॉक्टर विजय कुमार यादव ने बताया कि समिति के डायरेक्टर एग्रीकल्चर डॉक्टर जितेंद्र सिंह की अध्यक्षता में एक साथ पांच वैरायटीज का विमोचन यूनिवर्सिटी के लिए उपलब्धि है. गेहूं की प्रजाति 1910, के 2001, के 2010 को भी लांच किया गया है. वैरायटीज को डेवलप करने वाली टीम में डॉक्टर सोमवीर सिंह, डॉक्टर विजय यादव, डॉक्टर पीके गुप्ता, डॉक्टर पीके सिंह, डॉक्टर जावे, डा.चारुल कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना,पंकज और द्विनेश कुमार आदि का सहयोग रहा है. मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि वीसी डॉ आनंद ने प्रदेश स्तर पर गेहूं की चार वैरायटी की संस्तुति पर टीम को बधाई दी है.

सीएसए ने गेहूं की चार व मटर की एक और नई प्रजाति की विकसित

जौ की नई प्रजाति के विमोचन के दूसरे दिन ही विवि के खाते में दर्ज हुई एक और उपलब्धि

माई सिटी रिपोर्टर

गेहूं की नई प्रजाति के-1910 किसानों की आय बढ़ाने के साथ दूर करेगी कुपोषण

कानपुर। सीएसए के वैज्ञानिकों ने गेहूं की चार और मटर की एक नई प्रजाति विकसित की है। जौ की नई प्रजाति के विमोचन के दूसरे दिन ही चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) के वैज्ञानिकों ने इसकी घोषणा कर एक और कीर्तिमान स्थापित किया है। गेहूं की नई प्रजाति के-1910 किसानों की आय बढ़ाने के साथ कुपोषण दूर करेंगी। इसमें प्रोटीन के साथ आयरन और जिंक पर्याप्त मात्रा में है। वहीं, मटर की नई प्रजाति रोग मुक्त है और जल्द तैयार होने वाली है। इन सभी प्रजातियों को उत्तर प्रदेश राज्यस्तरीय शोध सलाहकार समिति ने बीज विमोचन की संस्तुति प्रदान कर दी है। इनके बीज अगले साल से बाजार में उपलब्ध होंगे।

पिछले तीन सालों से गेहूं की चारों प्रजातियों पर सीएसए के वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार यादव, डॉ. सोमवीर सिंह, डॉ. पीके गुप्ता, डॉ. पीके सिंह, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. जावेद, डॉ. चारुल कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना, पंकज कुमार, दिनेश कुमार रिसर्च कर रहे थे। मटर की नई प्रजाति डॉ. एसके गुप्ता और डॉ. गीता राय की टीम ने विकसित की है।

बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशक डॉ. विजय कुमार यादव ने बताया कि प्रदेश के छह विवि में सीएसए अकेला विवि है, जिसने गेहूं की एक साथ चार नई प्रजातियां विकसित की है। उन्होंने बताया कि के-1905 प्रजाति अन्य प्रजाति के मुकाबले 10.87 फीसदी अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 40.55 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति गेहूं में लगने वाले सभी रोगों से मुक्त है और 120 से 123 दिन में तैयार हो जाएगी। दूसरी के-2010 प्रजाति अन्य के सापेक्ष 10.96 फीसदी अधिक उत्पादन देगी। इसका औसत उत्पादन 39.21 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 12 फीसदी है। यह प्रजाति गेहूं में लगने वाले सभी रोगों से मुक्त है। यह 130 से 135 दिन में तैयार हो जाती है। के-2001 प्रजाति का 8.87 फीसदी उत्पादन अधिक है। इसका औसत उत्पादन 39.99 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। रोगों से मुक्त यह प्रजाति 130 से 135 दिन में तैयार हो जाएगी। वहीं, के-1910 प्रजाति अन्य के मुकाबले 8.19 फीसदी अधिक उत्पादन देगी। औसत उत्पादन 40.06 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 12 फीसदी, आयरन की मात्रा 39.04 फीसदी और जिंक की मात्रा 40.08 पीपीएम है। यह फसल 125 से 130 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

वहीं, मटर की प्रजाति केपीएमआर-907 आठ फीसदी अधिक उत्पादन दे रही है। इसका औसत उत्पादन 23 से 26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मटर में लगने वाले रोगों से मुक्त है और 50 से 60 दिन में तैयार हो जाती है। विवि के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कहा कि वैज्ञानिकों की उपलब्धियों पर संस्थान को गर्व है। यह प्रजातियां किसानों की आय बढ़ाने में मददगार होगी।

आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी 12:32 उपरांत अष्टमी विक्रम संवत 2081

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

गुरुवार, 10 अक्टूबर 2024
वर्ष 3, अंक 51, पृष्ठ 16
2 राज्य, 6 संस्करण
मूल्य 5 रुपये

अमृत विचार

कानपुर नगर

एक सम्पूर्ण अखबार

www.amritvichar.com

5 अरब वर्ष बाद भी जीवित रहेगी हमारी पृथ्वी 16 250 करोड़ के क्लब में शा

गेंहू की चार और मटर की एक प्रजाति लांच करेगा सीएसए

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति की ओर से हुई संस्तुति
- सीएसए की टीम की ओर से प्रजातियों को किया गया विकसित

अमृत विचार। गेंहू की चार व मटर की एक नई प्रजाति को लांच किया गया जाएगा। यह सभी प्रजातियां सीएसए विवि की टीम की ओर से तैयार की गई हैं। सभी नई प्रजातियों को लांच करने के लिए राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति ने अपनी संस्तुति प्रदान कर दी है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गेहूं-जौ अभिजनक एवं निदेशक बीज तथा प्रक्षेत्र डॉ विजय कुमार यादव ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति की बैठक उत्तर प्रदेश के निदेशक कृषि डॉ जितेंद्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में विश्वविद्यालय की ओर से विकसित गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन के लिए संस्तुति प्रदान कर दी है। उन्होंने बताया कि गेंहू की के 1905 प्रजाति लवण एवं क्षारीय मृदाओं में औसत उत्पादन 40.55 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति सभी रोगों के प्रति सहिष्णु है तथा यह 120 से 123 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। के 1910 का लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 40.06 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह 125 से 130 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। के 2001 प्रजाति लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 39. 99 कुंतल प्रति हेक्टेयर देती है। यह 130 से 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है। के 2010 लवण एवं क्षारीय भूमियों में 39.21 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। यह 130 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इन प्रजातियों को विकसित करने वाली टीम में डॉ सोमवीर सिंह, डॉ विजय कुमार यादव, डॉ पीके गुप्ता, डॉ पीके सिंह, डॉ जावेद बाहर, डा.चारुल कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना,पंकज कुमार एवं दिनेश कुमार का सहयोग रहा है। कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने टीम को बधाई दी है।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 16 अंक : 101 कानपुर, गुरूवार 10 अक्टूबर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

सलाहकार समिति ने गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन हेतु किया संस्तुति

कानपुर । सीएसए के गेहूं/जौ अभिजनक एवं निदेशक बीज तथा प्रक्षेत्र डॉक्टर विजय कुमार यादव ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति जो उत्तर प्रदेश के निदेशक कृषि डॉक्टर जितेंद्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई उसमें विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन हेतु संस्तुति कर दिया है। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा गेहूं की एक साथ चार प्रजातियों को बीज विमोचन हेतु समिति द्वारा अनुमोदित करना एक निश्चित तौर पर विश्वविद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने बताया कि गेहूं की प्रजाति के 1905 लवण एवं क्षारीय मृदाओं में औसत उत्पादन 40.55 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति सभी रोगों के प्रति सहिष्णु है तथा यह 120 से 123 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। जबकि के 1910 इसका लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 40.06 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह 125 से 130 दिनों में पककर तैयार

हो जाती है। उन्होंने बताया कि के 2001 लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 39. 99 कुंतल प्रति हेक्टेयर देती है यह 130 से 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है। जबकि के 2010 लवण एवं क्षारीय भूमियों में 39.21 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज देती है यह 130 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है इन प्रजातियों को विकसित करने वाली टीम डॉक्टर सोमवीर सिंह, डॉक्टर विजय कुमार यादव, डॉक्टर पी के गुप्ता, डॉक्टर पी के सिंह, डॉक्टर जावेद बाहर, डा.चारुल कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना,पंकज कुमार एवं दिनेश कुमार आदि का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील खान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने प्रदेश स्तर पर गेहूं की चार प्रजातियों की संस्तुति पर हर्ष व्यक्ति करते हुए टीम को उनके उज्जवल भविष्य हेतु बधाइयां दी हैं।

राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति ने गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन हेतु किया संस्तुति

अनवर अशरफ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के गेहूं/जौ अभिजनक एवं निदेशक बीज तथा प्रक्षेत्र डॉक्टर विजय कुमार यादव ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य स्तरीय शोध सलाहकार समिति जो उत्तर प्रदेश के निदेशक कृषि डॉक्टर जितेंद्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।उसमें विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की चार व मटर की एक प्रजाति को विमोचन हेतु संस्तुति कर दिया है। उन्होंने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा गेहूं की एक साथ चार प्रजातियों को बीज विमोचन हेतु समिति द्वारा अनुमोदित करना एक निश्चित तौर पर विश्वविद्यालय के लिए बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने बताया कि गेहूं की

प्रजाति के 1905 लवण एवं क्षारीय मृदाओं में औसत उत्पादन 40.55 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति सभी रोगों के प्रति सहिष्णु है तथा यह 120 से 123 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। जबकि के 1910 इसका लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 40.06 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। यह 125 से 130 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। उन्होंने बताया कि के 2001 लवण एवं क्षारीय भूमियों में औसत उत्पादन 39. 99 कुंतल प्रति हेक्टेयर देती है यह 130 से 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है। जबकि के 2010 लवण एवं क्षारीय भूमियों में 39.21 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज देती है यह 130 135 दिन में पककर तैयार हो जाती है।इन प्रजातियों को विकसित करने वाली टीम डॉक्टर सोमवीर सिंह, डॉक्टर विजय कुमार यादव, डॉक्टर पी के गुप्ता, डॉक्टर पी के सिंह, डॉक्टर जावेद बाहर, डा.चारुल कंचन के साथ तकनीकी सहायक ज्योत्सना,पंकज कुमार एवं दिनेश कुमार आदि का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है।विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर खलील ख़ान ने बताया कि कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने प्रदेश स्तर पर गेहूं की चार प्रजातियों की संस्तुति पर हर्ष व्यक्ति करते हुए टीम को उनके उज्जवल भविष्य हेतु बधाइयां दी हैं।